'गोदान में मुंशी प्रेमचन्द की सामाजिक दृष्टि'

20वीं सदी का भारतीय जीवन परतंत्रता की आड़ में कुसंस्कृति का करुण चित्कार कर रहा था जब ऐसे मार्गदर्शक सत्य-साहित्य के स्रष्टा की आवश्यकता थी तब मुंशी प्रेमचंद जी ने अवनति के गर्त में गिरते हुए भारतीय समाज को सबल दिया। मुंशी प्रेमचंद जी शताब्दियों से पददलित, अपमानित, निरुपेक्षित, कृषकों के आवाज थे। पर्दे में कैद, पद-पद पर लांछित, असहाय नारी जाति के महिमा के जबरदस्त वकील थे। अगर आप उत्तर भारत के जनता का आचार-विचार, रहन-सहन, सुख-दुख, आशा-आकांक्षा व दुःख-सुख जानना चाहते है तो मुंशी प्रेमचंद जी से उत्तम परिचायक आपको नहीं मिल सकता।

गोदान मुंशी प्रेमचंदजी की सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है। इसमें ग्राम जीवन की बहुरंगी, बहुआयामी सुंदर झाकियाँ हैं और इनसे उठती सोंधी-सोंधी महक हर किसी को अपनी ओर आकर्षित करने की क्षमता रखती है। इसमें मुंशी प्रेमचंद जी अपने लेखनी के माध्यम से जाति-पाँति के सीमाओं को किस प्रकार छिन्न-भिन्न किए हैं इसे पढ़ते ही बनता है।

एक सुवर्ण पात्र मातादीन निम्न वर्ग की सिल्लो को कैसे अपनाता है, यह मेरा घर है मातादीन सिलिया की झोपड़ी की ओर इशारा किया, सिलिया दुःखी स्वर में बोली — यह सिलिया चमारिन की घर है। नहीं सिलिया यह मेरी देवी का मंदिर है देवी का मंदिर है तो एक लोटा पानी उड़ेर कर

बलराम कुमार
31/07/2020

चली जाओगी। नहीं मिल्लों जब तक प्राण है तब तक तेरे शरण में रहूँगा, तेरी पूजा करूँगा। यही नहीं मुंशी प्रेमचंद जी जमींदारों के अत्याचार, पंडो के ढोंग, और साहू के निर्बल किसानों के प्रति गोदान में यथार्थ चित्रण किए हैं।

जमींदारों की ज्यादती और दीनहीन समाज के संस्कार के जाल में एक उलझा मजलूम किसान होरी जो जीवन भर छटपटाता रहा और समाज में प्रतिष्ठित कहे जाने वाले ठाकुर साहू और पंडो ने दिलखोल कर प्रताड़ना किया और इसी प्रताड़ना को समाज की परम्परा समझ बिना किसी विरोध के सहता रहा। एक गाय को अपने द्वार पर बाँधने की चाह में उसने अपना सारा जीवन होम कर दिया और इसी लालसा में उसके प्राण निकले तो समाज के पंडित दातादीन ने उसकी पत्नी धनियाँ को गोदान करने को कहा जबकि उस बेचारी धनिया के पास होरी के उचित क्रियाक्रम तक के पैसे न थे। इस प्रकार मुंशी प्रेमचंद जी समाज के यथार्थ स्थिति को हूबहू अवलोकित कराकर जीवन के इन सामाजिक रहस्यों को पर्दाफास कर दिया। इसलिए तो कहा जाता है—

"सिर्फ आँखों से ही दुनियाँ नहीं देखी जाती,
दिल की धड़कन को भी बिनाई बनाकर देखो,
वो सितारा है चमकने दो इन्हीं आँखों में,
क्या जरूरी है उसे जिस्म बनाकर देखो।"

बलराम कुमार
31-7-2020